

46

## पाठ-1 दो बिलों की कथा

प्रश्न 1) कांजीदास से कैंद पशुओं की हाजिरी क्यों ली जाती होगी?

उत्तर) कांजीदास एक प्रकार से पशुओं की जेल थी। उसमें ऐसे आकार पशु कैंद होते थे जो दूसरों के खेतों में घुसकर फसलें नष्ट करते थे। अतः कांजीदास के मालिक का यह काम होता था कि वह उन्हें जेल से सुरक्षित रखे तथा भागने न दें। इस कारण हर रोज उनकी हाजिरी लेनी पड़ती होगी।

प्रश्न 2) छोटी बच्ची को बिलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

उत्तर) छोटी बच्ची की माँ मर चुकी थी। वह माँ के बिछुड़ने का दर्द जानती थी। इसलिए जब उसने हिरा-मोती की लुथा देखी तो उसके मन में उनकी प्रति प्रेम उमड़ गया। उसे लगा कि वे भी उसी की तरह अभागी हैं और अपने मालिक से दूर हैं।

प्रश्न 3) कहानी में बिलों के माध्यम से कौन-कौन से नीति-विषयक मूल्य उभर कर आये हैं?





उ० -

इस कहानी के माध्यम से निम्नलिखित  
नीति विषयक सूत्र्य उभारकर सामने आर हैं -  
शरल - सीधा और अत्यधिक सहनशील होना  
पाप है। बहुत सीधे इंसान को मूर्ख  
या 'गधा' कहा जाता है। इसलिए मनुष्य  
को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना  
चाहिए।

आजादी बहुत बड़ा सूत्र्य है। इसे पाने के  
लिए मनुष्य को बड़े - से - बड़ा कष्ट उठाने  
को तैयार रहना चाहिए। साम्राज्य में  
के सुखी - सम्पन्न लोगों को भी आजादी की  
लड़ाई में योगदान देना चाहिए।

प्र० 4 -

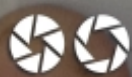
किन्हीं घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और  
मौती में गहरी दोस्ती थी?

उ० -

इस कहानी में अनेक घटनाएँ ऐसी हैं जिन्हें  
पता चलता है कि मौती और हीरा में  
गहरी दोस्ती थी।

पहली घटना - दोनों एक - साथ गाड़ी में  
जाते जाते थे तो दोनों की यही कौशिक  
बढ़ती कि ज्यादा भार उसके कंधे पर  
हो न कि उसके दूसरे साथी पर।

दूसरी घटना - गया ने हीरा के नाक पर  
डंका मारा तो मौती से सहन न गया।  
तब हल, रस्सी, जुआ, जोत सब लेकर  
भाग पड़ा। उससे हीरा का कष्ट देखा नहीं





गया।  
तीसरी घटना - मीती मटर के खेत में मटर  
खाते-खाते पकड़ा गया। हीरा उसे अकेला  
विपत्ति में देखकर वापस आ गया। वह  
भी मीती के साथ पकड़ा गया।

प्रश्न-→ किसान जीवन वाले समाज में पशु और  
मनुष्य के आपसी सम्बन्धों की कहानी में  
किस तरह व्यक्त किया गया है।

उत्तर - किसान जीवन में पशुओं और मनुष्यों के  
आपसी संबंध बहुत गहरे रहे हैं। किसान  
पशुओं को घर के सदस्य की तरह तैयार  
करते रहे हैं और पशु अपने स्वामी के  
लिए जी-जान देने को तैयार रहे हैं।  
हीरा, हीरा और मीती को बच्चों की तरह  
स्नेह करता था। तभी तो अपने उनके  
सुंदर-सुंदर नाम रखे - हीरा-मीती।  
वह उन्हें अपनी आँखों से दूर नहीं  
कहना चाहता था। जब हीरा-मीती उसकी  
समुवाल से लौटकर वापस उसके धान पर  
आ खड़े हुए तो उसका हृदय आनंद से  
भर गया। गांव-भर के बच्चों ने भी  
वैलों की स्वामिभक्ति देखकर उनका अभिनिंदन  
किया। इससे पता चलता है कि किसान अपने  
पशुओं से मानवीय व्यवहार करते हैं।

